

मूक पत्रिका

निष्पक्ष, निर्भीक, स्वतंत्र आवाज...

वर्ष - 03 अंक - 06 बेमेतरा, बुधवार 19 अगस्त 2026 रायपुर एवं बेमेतरा से प्रकाशित कुल पेज - 08 मूल्य - 1 रुपये डाक पंजीयन- दुर्ग/1743290201/2025-27

संक्षिप्त समाचार

पंचायत राज इंजीनियर समेत तीन लोगों ने नदी में कूदकर की खुदकुशी

अमरावती। आंध्र प्रदेश के पूर्वी गोदावरी जिले में रोड-कम-रेल ब्रिज के पास गोदावरी नदी में कूदकर पंचायत राज विभाग के एक असिस्टेंट इंजीनियर, उनकी पत्नी और बेटी ने आत्महत्या कर ली। स्थानीय मछुआरों ने सतर्कता से उनके पोते को सुरक्षित बचा लिया। साउथ जोन की डिप्टी सुपरिंटेंडेंट ऑफ पुलिस ए. शिवप्रिया के अनुसार, मृतकों की पहचान पीठपुरम में पदस्थ असिस्टेंट इंजीनियर गोलापुडी नुकाराजू, उनकी पत्नी और बेटी सौजन्या के रूप में हुई है। रविवार शाम को यह परिवार एक झूवर के साथ कार से राजमुंदरी के लिए निकला था। कोव्वूर पहुंचने पर उन्होंने झूवर को पैसे देकर भेज दिया और कार खुद चलाने लगे, जिसे बेटी सौजन्या चला रही थी। रात लगभग 11:45 बजे ब्रिज के पास पहुंचने पर सबसे पहले नुकाराजू की पत्नी ने नदी में छलांग लगाई, जिसके बाद नुकाराजू, सौजन्या और उनका बेटा भी नदी में कूद गए। 5वें कक्षा में पढ़ने वाला यह बच्चा एक राष्ट्रीय स्तर का तैराक है। उसने शुरुआत में अपनी दादी का हाथ पकड़कर बचाने की कोशिश की और मदद के लिए चिल्लाया। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस ने स्थानीय नाविकों और मछुआरों की मदद ली, जिन्होंने रात में ही लड़के को आवाज सुनकर उसे सुरक्षित बाहर निकाल लिया।

पति को डूबता देख तालाब में कूदी पत्नी, दोनों की डूबने से मौत

बलरामपुर। छत्तीसगढ़ के बलरामपुर जिले से दर्दनाक घटना सामने आई है. तालाब में गिरने से पति डूबने लगा, बचाने के लिए पत्नी ने छलांग लगा दी. हालांकि दोनों बाहर नहीं आ पाए और उनकी डूबने से मौत हो गई. रिश्तेदार जसमती भी उन्हें बचाने के लिए पानी में उतर गई थी, लेकिन ग्रामीणों ने उसे बाहर निकाल लिया. घटना कुसमी थाना क्षेत्र के अमरपुर के बड़का जोषी की है. जानकारी के मुताबिक मृतकों की पहचान मुनेश्वर नाग और उनकी पत्नी घुघरी नाग के रूप में हुई है. वन विभाग के तालाब में अचानक मुनेश्वर गिरकर पानी में डूबने लगा, जिसके बाद उनकी पत्नी ने भी छलांग लगा दी. बाहर निकलने का प्रयास अप्रफल रहा. दोनों की डूबकर मौत हो गई.

24 दिन के प्रदर्शन के बाद झुकी हेमंत सोरेन सरकार

2014 से सभी परीक्षाओं की सीआईडी जांच-छात्रों में जश्न

रांची/ एजेंसी

झारखंड में सरकारी भर्ती परीक्षाओं को लेकर 24 दिनों से चल रहे छात्र आंदोलन के बीच हेमंत सोरेन सरकार ने बड़ा फैसला लिया है। सरकार ने जेएसएससी सीजीएल परीक्षा रद्द करने का ऐलान किया है। इसके साथ ही टीडीपीएल के जरिए कराई गई परीक्षाओं और उससे जुड़ी भर्तियों को भी रद्द करने का फैसला लिया गया है। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने कहा कि 2014 से झारखंड में हुई गड़बड़ियों की सीआईडी जांच की जाएगी। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने सोमवार को कहा कि टीडीपीएल द्वारा जारी किए गए रिजल्ट और उसके जरिए चयनित उम्मीदवारों से जुड़े मामलों की समीक्षा

की जाएगी। सरकार ने टीडीपीएल की उन सभी गतिविधियों और परीक्षाओं पर कार्रवाई का फैसला लिया है, जिनमें कथित तौर पर अनियमितताओं के आरोप सामने आए हैं। जेएसएससी-सीजीएल परीक्षा को रद्द करना लंबे समय से आंदोलन कर रहे अभ्यर्थियों की प्रमुख मांगों में शामिल था। छात्रों का आरोप है कि भर्ती परीक्षाओं में पारदर्शिता नहीं बरती गई और परीक्षा प्रक्रिया में गंभीर गड़बड़ियां हुई। हेमंत सोरेन ने कहा कि 2014 से अब तक झारखंड में हुई परीक्षाओं में सामने आई गड़बड़ियों की जांच सीआईडी करेगी। मुख्यमंत्री के मुताबिक सीआईडी और एसआईटी की मौजूदा जांच में कई ऐसे तथ्य सामने आए हैं, जिनके आधार पर आगे कार्रवाई की जा रही है। उन्होंने कहा कि जेएसएससी



के जरिए भर्ती हुए कुछ लोगों को परीक्षा में कथित धोखाधड़ी और धांधली के मामलों में गिरफ्तार भी किया जा रहा है। सरकार का कहना है कि परीक्षा व्यवस्था में पारदर्शिता सुनिश्चित करने के लिए जांच को व्यापक बनाया जा रहा है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि परीक्षा आयोजित करने के लिए सरकार के पास पहले से ही Standard Operating Procedure (SOP) मौजूद था, लेकिन उसका सही तरीके से पालन नहीं किया गया। उन्होंने कहा कि अगर

एसओपी का पालन किया जाता तो हाल में सामने आई गड़बड़ियों को रोका जा सकता था। सरकार अब परीक्षा और भर्ती प्रक्रिया में जरूरी सुधार करने पर जोर दे रही है। हेमंत सोरेन ने परीक्षा प्रणाली में सुधार के लिए एक कमेटी बनाने की भी घोषणा की है। यह कमेटी वरिष्ठ आईएएस अधिकारी अमिताभ कोशल की अध्यक्षता में काम करेगी। कमेटी का उद्देश्य भर्ती परीक्षाओं की प्रक्रिया में मौजूद कमियों को चिन्हित करना और भविष्य में परीक्षा व्यवस्था को अधिक पारदर्शी और सुरक्षित बनाने के लिए सुधार सुझाना होगा। सरकार ने छात्रों की शिकायतों को दर्ज करने के लिए एक पोर्टल भी तैयार किया है। पोर्टल पर मिलने वाली शिकायतों को मामले की जांच कर रही विशेषज्ञ टीम के साथ साझा किया जाएगा।

आंदोलन जारी रखेंगे देवेंद्र महतो,बोले-अब लीक पुफ सिस्टम बनाएं

झारखंड सरकार की ओर से जेएसएससी सीजीएल परीक्षा और टीडीपीएल द्वारा आयोजित सभी परीक्षाओं को रद्द करने के फैसले के बाद छात्र नेता देवेंद्र नाथ महतो ने इसे छात्रों के संघर्ष की ऐतिहासिक जीत बताया है। छात्र नेता ने कहा कि लंबे समय से छात्र पेपर लीक, परीक्षा में गड़बड़ी और भर्ती प्रक्रिया में पारदर्शिता की मांग को लेकर लंबे समय से आंदोलन कर रहे थे। जिसके बाद सरकार के फैसले से उनकी मांगों को ऐतिहासिक सफलता मिली है। हालांकि, महतो ने स्पष्ट किया कि केवल परीक्षाएं रद्द करना या सीबीआई-सीआईडी जांच कराना पर्याप्त नहीं है। उन्होंने परीक्षा व्यवस्था में स्थायी सुधार और भविष्य में पेपर लीक की घटनाओं को रोकने के लिए लीक-प्रूफसिस्टम बनाने की मांग की।

झारखंड सरकार ने मानी छात्रों की बात

छात्र सवाल पूछें, तो जवाब मिलना चाहिए-राहुल गांधी

नई दिल्ली/ एजेंसी

झारखंड सरकार ने जेएसएससी जेपीएससी भर्ती परीक्षाओं में कथित घोटाले के विरोध में प्रश्नोत्तर कर रहे छात्रों की मांग मान ली हैं। सोमवार की देर शाम मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने जेएसएससी सीजीएल परीक्षाओं को रद्द करने का ऐलान किया। इसे लेकर अब कांग्रेस नेता और सांसद राहुल गांधी की प्रतिक्रिया सामने आई है। उन्होंने इसे छात्रों की जीत करार दिया। राहुल गांधी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर पोस्ट करते हुए खुशी जाहिर की। कांग्रेस



नेता ने कहा कि झारखंड के छात्रों और राज्य सरकार के बीच सहमति बनी, और छात्रों ने अपनी भूख हड़ताल समाप्त की- यह खबर सुनकर बहुत खुशी हुई। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन जी और झारखंड सरकार ने बातचीत का रास्ता चुना,

और समाधान निकाला। छात्रों ने संयम रखा, और अपनी बात मनवाई। यही सही तरीका है-छात्र सवाल पूछें, तो जवाब मिलना चाहिए। राहुल गांधी ने कहा कि झारखंड के छात्रों और हेमंत सोरेन सरकार के बीच सहमति बनी, और छात्रों ने अपनी भूख हड़ताल समाप्त की, और छात्रों ने अपनी भूख हड़ताल समाप्त की- यह खबर सुनकर बहुत खुशी हुई। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन जी और झारखंड सरकार ने बातचीत का रास्ता चुना,

स्कूल में दारू पीकर आता था प्रिंसिपल

धरना प्रदर्शन और चेतावनी के बाद हुआ सस्पेंड-दीपेक

नई दिल्ली। काँकरोच जनता पार्टी द्वारा देशभर में चलाए जा रहे ‘स्कूल ठीक करो’ अभियान के तहत महाराष्ट्र से एक बड़ी खबर सामने आई है। हिंगोली जिले के लिंबाला गांव स्थित जिला परिषद स्कूल के प्रिंसिपल पर गाज गिरी है। लंबे समय से शराब पीकर स्कूल आने और शैक्षणिक माहौल खराब करने के आरोपी प्रिंसिपल को आखिरकार शिक्षा विभाग ने सस्पेंड कर दिया है। काँकरोच जनता पार्टी के संस्थापक अध्यक्ष अभिजीत दिपके ने बताया कि हिंगोली जिले में लिंबाला गांव के स्कूल के शराबी प्रिंसिपल पर कार्रवाई हुई है। उन्हें सस्पेंड कर दिया गया है। प्रिंसिपल



दारू पीकर स्कूल आता था। इस दौरान उन्होंने अब्दुल और उसके दिवंगत पिता का भी जिक्र किया। सीजेपी के फंडर अभिजीत दीपके ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर एक वीडियो पोस्ट करते हुए लिखा कि हिंगोली जिले के लिंबाला गांव वालों के लिए यह पहली बड़ी जीत है।

गौशाला कर्मों की करंट लगने से मौत, परिजनों ने की मुआवजे की मांग

मेरठ। परतापुर थाना क्षेत्र के बराल गांव स्थित कान्हा उपवन गौशाला में हरा चारा काटते समय करंट की चपेट में आकर अंकज (32) की मौत हो गई। इस दुखद घटना के बाद मृतक के परिवारजनों में गहरा आक्रोश व्याप्त है। उन्होंने अस्पताल में हंगामा करते हुए प्रशासन से मुआवजे की मांग की है। बराल गांव निवासी अंकज प्रजापति पुत्र सुभाष कान्हा उपवन गौशाला में साफ-सफाई और हरा चारा काटने का कार्य करते थे। गत आठ आगस्ट को अंकज मशीन से हरा चारा काट रहे थे, तभी जेनरेटर से जुड़े तारों से जमीन पर जमा पानी में करंट उतर गया। इस अचानक करंट प्रवाह की चपेट में आने से अंकज गंभीर रूप से झुलस गए।

देवरिया में कारों की आमने-सामने टक्कर में युवक की मौत

देवरिया। देवरिया जिले के गौरीबाजार थाना क्षेत्र के हिन्दुस्तान पेट्रोल पंप के पास देर रात दो कारों की आमने-सामने हुई भीषण टक्कर में 24 वर्षीय युवक की मौत हो गई। जबकि सात लोग घायल हो गए। टक्कर के बाद एक कार में आग लग गई। गौरीबाजार पुलिस ने स्थानीय लोगों की मदद से आग पर काबू पाने के साथ घायलों को बाहर निकालकर मेडिकल कालेज भेजा। मृतक की पहचान देवरिया के अबूबकर नगर निवासी शरिक पुत्र जहांगीर के रूप में हुई।हादसा रात करीब 11:30 बजे हुआ।यह सूचना पुलिस ने दी है। पुलिस के अनुसार बलिया से गोरखपुर जा रही कार में रेवती निवासी ऋतिक पुत्र सत्येंद्र (26) और सिद्धार्थ सोनी पुत्र तारकेश्वर (25) सवार थे।

विनोद तावड़े को उत्तर प्रदेश की जिम्मेदारी

2027 चुनाव से पहले बीजेपी का दांव...इन नेताओं को यूपी-पंजाब-गुजरात की कमान

नई दिल्ली। आगामी वर्ष में उत्तर प्रदेश, पंजाब और गुजरात में होने वाले विधानसभा चुनावों को ध्यान में रखते हुए भारतीय जनता पार्टी ने मंगलवार को नए राज्य चुनाव प्रभारियों की नियुक्ति कर दी है। पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नक्वीन ने संगठन में बड़े फेरबदल की प्रक्रिया के तहत इन तीनों महत्वपूर्ण राज्यों के लिए नए प्रभारियों के नामों का ऐलान किया है। राजनीतिक दृष्टिकोण से बेहद अहम माने जाने वाले इन राज्यों में पार्टी की पकड़ मजबूत करने और गतिविधियों में समन्वय स्थापित करने के उद्देश्य से यह नियुक्तियां

की गई हैं। पार्टी ने सबसे बड़े राज्य उत्तर प्रदेश के लिए वरिष्ठ नेता विनोद तावड़े को बीजेपी का नया राज्य चुनाव प्रभारी नियुक्त किया है। उनके साथ ही जगदिश ईश्वरभाई पटेल को सह-प्रभारी की जिम्मेदारी सौंपी गई है। आगामी चुनावी समर को देखते हुए उत्तर प्रदेश में पार्टी संगठन को धार देने के लिए यह फैसला काफी अहम माना जा रहा है। इसके अलावा, पंजाब में पार्टी के संगठनात्मक ढांचे को मजबूत करने की जिम्मेदारी सलीश पूनिया को सौंपी गई है, जिन्हें राज्य का नया चुनाव प्रभारी बनाया गया है। वहीं,



राजनीतिक रूप से बेहद संवेदनशील माने जाने वाले गुजरात राज्य के लिए तरुण चुच को बीजेपी का नया राज्य चुनाव प्रभारी नियुक्त किया गया है। 2027 में कई राज्यों में विधानसभा चुनाव होने हैं, जिससे यह राज्य-स्तरीय राजनीति के

लिए एक महत्वपूर्ण वर्ष बन गया है। उत्तर प्रदेश, पंजाब, गुजरात, उत्तराखंड, गोवा, मणिपुर और हिमाचल प्रदेश में चुनाव होने की उम्मीद है। 403 विधानसभा सीटों वाला उत्तर प्रदेश सबसे अधिक ध्यान आकर्षित करने वाले मुकामलों में से एक होगा। पंजाब में 117 विधानसभा सीटें हैं, जबकि गुजरात में 182 सीटें हैं। उत्तराखंड (70 सीटें), गोवा (40 सीटें), मणिपुर (60 सीटें) और हिमाचल प्रदेश (68 सीटें) में भी चुनाव होने हैं। चुनाव पूरे वर्ष के दौरान होंगे; उत्तर प्रदेश, पंजाब, उत्तराखंड, गोवा और मणिपुर जैसे राज्यों में चुनाव 2027 की शुरुआत में होने की उम्मीद है।

केंद्र सरकार विकल्प तलाशने और समिति बनाने के लिए स्वतंत्र

देश में फांसी के जरिए ही दी जाएगी मौत की सजा;जहरीले इंजेक्शन की मांग वाली याचिका सुप्रीम कोर्ट से खारिज...

नई दिल्ली/ एजेंसी

भारत में मृत्युदंड की प्रक्रिया को बदलने और फंसी के बजाय कम तकलीफदेह तरीकों को अपनाने की कानूनी बहस पर सुप्रीम कोर्ट ने अहम फैसला सुनाया है। जस्टिस विक्रम नाथ और जस्टिस संदीप मेहता की खंडपीठ ने वकील ऋषि मल्होत्रा द्वारा दायर उस याचिका पर सुनवाई करते हुए यह निर्णय दिया, जिसमें फंसी को अमानवीय बताते हुए वैज्ञानिक व आधुनिक तरीकों से सजा पर अमल करने की गुहार लगाई गई थी। कोर्ट

ने स्पष्ट किया कि वर्तमान में फंसी की सजा के वैधानिक और संवैधानिक आधार को चुनौती देने का कोई ठोस आधार नहीं बनता है। याचिकाकर्ता ऋषि मल्होत्रा की ओर से दलील दी गई थी कि सीआरपीसी की धारा 354(5) के तहत फंसी की सजा अमानवीय, दर्दनाक और बरुर है। याचिका में तर्क दिया गया कि फंसी के फंदे पर लटकने के बाद मौत की पुष्टि होने में लगभग 40 मिनट तक का समय लग जाता है, जबकि जहरीला इंजेक्शन देने, गोली मारने, बिजली का झटका देने या गैस चैंबर जैसे

आधुनिक तरीकों से यह प्रक्रिया महज 5 मिनट में पूरी हो जाती है। याचिका में संविधान के अनुच्छेद 21 के तहत ‘सम्मान के साथ मरने के अधिकार’ को मौलिक अधिकार के रूप में मान्यता देने और संयुक्त राष्ट्र के उस प्रस्ताव का हवाला दिया गया, जिसमें मृत्युदंड के दौरान कम से कम मानवीय पीड़ा सुनिश्चित करने की बात कही गई है। सुप्रीम कोर्ट ने इस मुद्दे पर ‘दीना बनाम भारत संघ’ समेत अपने पुराने तीन फैसलों को वृहद पीठ (बड़ी बेंच) को भेजने से साफ इनकार कर दिया। हालांकि अदालत ने अपने



फैसले में यह स्पष्ट किया कि इस याचिका को खारिज करने का अर्थ यह नहीं है कि भविष्य में संवैधानिक समीक्षा के रास्ते पूरी तरह बंद हो गए हैं।इतिहास बेंच ने

कहा कि यदि आगे चलकर कोई ठोस वैज्ञानिक, मेडिकल या अनुभव-आधारित साक्ष्य सामने आते हैं, जिनसे यह साबित हो कि पहले के फैसलों का तथ्यात्मक

आधार बदल चुका है, तो भविष्य में इसकी संवैधानिक जांच की जा सकती है। कोर्टने कहा कि केंद्र सरकार चाहे तो मृत्युदंड के वैकल्पिक तरीकों की व्यापक समीक्षा के लिए विशेषज्ञों की एक उच्चस्तरीय समिति गठित करने के लिए पूरी तरह स्वतंत्र है। इससे पहले की सुनवाई के दौरान अर्दानीं जनरल आर. वेंकटरमणी ने बताया था कि सरकार इस विषय पर विचार के लिए समिति बना रही है। सुनवाई के दौरान दोषियों को फंसी या जहरीले इंजेक्शन में से विकल्प चुनने की संभावना पर भी चर्चा हुई थी।

कंगना ने दिया कांग्रेस को मुंहतोड़ जवाब

वंदे मातरम से पाकिस्तानियों से ज्यादा कांग्रेस क्यो तड़पती है?

नई दिल्ली। बॉलीवुड की क्रीन और सांसद कंगना रनौत अपने बेबाक बयानों के लिए जानी जाती है। जहां एक ओर गटर जनरेशन वाले बयान के बाद से ही कांग्रेस लगातार कंगना पर हमलावर रही है, तो वहीं अब कंगना ने भी सोनिया गांधी पर निशाना साधा है। हाल ही में स्वतंत्रता दिवस के मौके पर वंदे मातरम गाने को रुकवाने के बाद से सोनिया गांधी और कांग्रेस बीजेपी के निशाने पर है, तो अब कंगना ये मौका कैसे हाथ से जाने देती। कंगना ने भी इस वाक्ये को लेकर अपनी राय सार्वजनिक तौर पर रखी है। हाल ही में संसद से बाहर आते समय कंगना ने ये



बयान दिया है कि वंदे मातरम भारत की चेतना को दिखाता है। एक आर्टिस्ट के तौर पर, मैं समझती हूँ कि आर्ट और कविता का लोगों पर क्या असर हो सकता है। इसके प्रति जो विरोध और नफरत दिखाई गई है, और इसे गाने से रोकने की जो कोशिशें की गई हैं, वे बहुत चिंता की बात हैं।



संपादकीय

सुखबीर सिंह बादल पर उस वक्त हमला हुआ, जब वे महाराष्ट्र के नांदेड़ स्थित एक गुरुद्वारे में गए थे। हेरत इस बात की है कि सुखबीर को ‘जेड प्लस’ श्रेणी की सुरक्षा प्राप्त होने के बावजूद हमलावर उनके इतने करीब कैसे पहुंच गया? गुरुवार, 13 अगस्त, 2026 को महाराष्ट्र के नांदेड़ ज़िले में एक गुरुद्वारे के पास हमले के बाद, अकाली दल के प्रमुख और पंजाब के पूर्व डिप्टी सीएम सुखबीर सिंह बादल को अपने

दाहिने हाथ पर कपड़ा लपेटे हुए एक इमारत के अंदर जाते देखा गया। एक सप्ताह के भीतर अलग-अलग राजनीतिक दलों के दो नेताओं पर जिस तरह से हिंसक हमले हुए हैं, उससे सियासी गलियारों में एक अलग तरह की चिंता पैदा हो गई है। हाल में तृणमूल कांग्रेस प्रमुख एवं पूर्व मुख्यमंत्री ममता बनर्जी की कार पर भीड़ का हमला और अब शिरोमणि अकाली दल के अध्यक्ष एवं पंजाब के पूर्व उपमुख्यमंत्री सुखबीर

सिंह बादल पर किरपाण से वार करने की घटनाओं ने प्रमुख नेताओं की निजी सुरक्षा को लेकर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं।सरकार की ओर से ऐसे नेताओं को सुरक्षा मुहैया कराई जाती है, लेकिन सुरक्षा का यह घेरा क्या इतना कमजोर होता है कि कोई भी उसमें सेंध लगा सकता है? सवाल यह भी है कि क्या हिंसा या प्रतिशोध से किसी समस्या का समाधान हो सकता है? किसी भी राजनीतिक दल या उसके नेता के

विचारों एवं कार्यों से असहमति व्यक्त की जा सकती है, लेकिन इसे तभी उचित ठहराया जा सकता है, जब यह नियम-कानून की सीमा के दायरे में हो।गौरतलब है कि सुखबीर सिंह बादल पर बीते गुरुवार को उस वक्त हमला हुआ, जब वे महाराष्ट्र के नांदेड़ स्थित एक गुरुद्वारे में गए थे। एक शख्स ने अचानक किरपाण से उन पर हमला कर दिया, जिससे वे घायल हो गए। हालांकि बाद में पुलिस कर्मियों ने हमलावर

को गिरफ्तार कर लिया, लेकिन हेरत इस बात की है कि सुखबीर को ‘जेड प्लस’ श्रेणी की सुरक्षा प्राप्त होने के बावजूद हमलावर उनके इतने करीब कैसे पहुंच गया? यह पहली बार नहीं है जब उन पर इस तरह का हमला हुआ है, वर्ष 2024 में भी स्वर्ण मंदिर में उन पर जानलेवा हमला हुआ था। पुलिस के मुताबिक, नांदेड़ गुरुद्वारे में हमले का आरोपी वहां दो साल से सेवादार के रूप में काम कर रहा था। इस घटना को

लेकर पुलिस जांच में तेजी और गंभीरता का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि एक दिन बाद भी हमले के असली कारणों का पता नहीं चल पाया है।पंजाब में अगले वर्ष विधानसभा चुनाव होने हैं और ऐसे में सुरक्षा की दृष्टि से भी यह घटना बेहद संवेदनशील है। राज्य में अलगाववादी ताकतें फिर से सिर न उठा पाएँ, इसकी जिम्मेदारी केंद्र और राज्य सरकार दोनों की है।

तप- धैर्य, साधना और श्रेष्ठता की अनदेखी ताकत

तपका अर्थ है स्वेच्छा और प्रसन्नतापूर्वक कष्ट स्वीकार करना ।यही भावना साधारण कष्ट को आनंद और आत्म-विकास का माध्यम बना देती है। भारतीय संस्कृति में तप एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण मूल्य रहा है। इसका संबंध केवल धार्मिक साधना से नहीं बल्कि अपनी गुणवत्ता में वृद्धि, परोपकार और किसी उच्च उद्देश्य की प्राप्ति के लिए स्वेच्छा से शारीरिक और मानसिक कष्ट सहने से है। भगीरथ, ध्रुव, दधीचि, महावीर और बुद्ध जैसे महापुरुषों से लेकर रामकृष्ण परमहंस, महर्षि रमण, महात्मा गांधी, विनोबा भावे, मार्टिन लूथर किंग और नेल्सन मंडेला तक अनेक व्यक्तित्व तप के आदर्श रहे हैं।

(सदाशिव श्रेत्रिय)

तप का अर्थ है स्वेच्छा और प्रसन्नतापूर्वक कष्ट स्वीकार करना। यही भावना साधारण कष्ट को आनंद और आत्म-विकास का माध्यम बना देती है। भारतीय संस्कृति में तप एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण मूल्य रहा है। इसका संबंध केवल धार्मिक साधना से नहीं बल्कि अपनी गुणवत्ता में वृद्धि, परोपकार और किसी उच्च उद्देश्य की प्राप्ति के लिए स्वेच्छा से शारीरिक और मानसिक कष्ट सहने से है। भगीरथ, ध्रुव, दधीचि, महावीर और बुद्ध जैसे महापुरुषों से लेकर रामकृष्ण परमहंस, महर्षि रमण, महात्मा गांधी, विनोबा भावे, मार्टिन लूथर किंग और नेल्सन मंडेला तक अनेक व्यक्तित्व तप के आदर्श रहे हैं। ऐसे अनेक तपस्वी भी हुए हैं, जिन्हें व्यापक प्रसिद्धि नहीं मिली, पर जिन्होंने अपना जीवन समाज के लिए समर्पित कर दिया।तप का अर्थ है स्वेच्छा और प्रसन्नतापूर्वक कष्ट स्वीकार करना। यही भावना साधारण कष्ट को आनंद और आत्म-विकास का माध्यम बना देती है। सोने को तपाने से जैसे उसकी चमक बढ़ती है, वैसे ही तप मनुष्य के व्यक्तित्व को निखारता है। संगीत, योग, साहित्य, भक्ति और समाज सेवा जैसे क्षेत्रों में उत्कृष्टता का आधार भी दीर्घकालीन तप ही रहा है। पंडित रविशंकर ने अपनी आत्मकथा में अपने गुरु उस्ताद अलाउद्दीन खां के कठोर अभ्यास का जो वर्णन किया है, वह बताता है कि किसी क्षेत्र में सिद्धि बिना तप के संभव नहीं।

तप के ऐसे पक्ष जिन पर कम ध्यान दिया जाता तप के दो ऐसे पक्ष हैं जिन पर आज कम ध्यान दिया जाता है। पहला, तप के लिए समय चाहिए, जबकि आज अधिकांश लोग शीघ्र परिणाम चाहते हैं। दूसरा, तप का सबसे बड़ा प्रभाव व्यक्ति के भीतर होता है, जो बाहर से तुरंत दिखाई



नहीं देता। आज सफलता का मूल्यांकन लोकप्रियता, धन और बाजार की कसौटी पर होने लगा है। जबकि श्रेष्ठता और लोकप्रियता हमेशा एक-दूसरे की पर्याय नहीं होतीं। पतंजलि के योगसूत्र में तप को ‘नियम’ का आवश्यक अंग माना गया है और क्रियायोग के तीन प्रमुख तत्त्वों- तप, स्वाध्याय और ईश्वर-प्रणिधान में उसको स्थान दिया गया है। इससे स्पष्ट है कि भारतीय चिंतन में तप केवल व्यक्तिगत साधना नहीं, बल्कि आत्म-विकास का अनिवार्य साधन रहा है।

तप का भाव लंबे समय तक विविध रूपों में विद्यमान रहा हमारे समाज में तप का भाव लंबे समय तक विविध रूपों में विद्यमान रहा। उपवास, व्रत, सेवा, अनुशासन और त्याग उसी के रूप हैं। माता-पिता बच्चों को दूसरों के लिए कष्ट उठाने की शिक्षा देते थे, शिक्षक अपने शिष्यों को विषय के गहन अध्ययन के लिए प्रेरित करते थे और विद्यार्थी आज की तरह किन्हीं दर्ज बिंदुओं पर आश्रित न रह कर मूल ग्रंथों का अध्ययन करते थे। सेवा को भी तप का रूप माना जाता था।

एक परिचित ने अपने वृद्ध माता-पिता की सेवा को जीवन का प्रमुख दायित्व माना जबकि उसके अन्य भाइयों ने उसमें विशेष रूचि नहीं ली। यह सेवा-तप का एक प्रेरक उदाहरण था। किसी उद्देश्य के प्रति समर्पण और उसके लिए धैर्य का धारण भी तप ही है। कई लोग किसी लक्ष्य का निर्धारण तो कर लेते हैं, लेकिन उसे प्राप्त करने के लिए जिस मार्ग पर चलना पड़ता है, उस पर चलने का धैर्य नहीं रखते। ऐसे में मन में जिस तरह की हड़बड़ी या जल्दी मचती है, उसके नतीजे में या तो लक्ष्य की ओर का यह सफर अधूरा रह जाता है या फिर व्यक्ति रास्ता भटक कर कहीं और पहुंच जाता है।

आज तप-भाव तेजी से क्षीण होता जा रहा इसके बाद एक समस्या और आती है। अपनी चूक पर गौर नहीं करने के बाद या तो लक्ष्य को या फिर रास्ते को कठघरे में खड़ा किया जाता है। जबकि सच यह है कि आज तप-भाव तेजी से क्षीण होता दिखाई देता है। आलस्य, आरामतलबी और त्वरित सफलता की इच्छा बढ़ रही है। विद्यार्थी गहन अध्ययन के स्थान पर सक्षिप्त रास्ता खोजते हैं। त्याग,

सादगी, मितव्ययिता और तप जैसे मूल्य पहले जितने आदरणीय नहीं रहे। जीवन का आदर्श अधिक से अधिक सुविधा प्राप्त करना बनता जा रहा है। इस सुविधा-प्रधान जीवनशैली को ही प्रतिष्ठा का प्रतीक माना जाने लगा है। कुछ लोग तकनीकी प्रगति, उपभोक्तावाद और परिवार-संरचना में परिवर्तन को इसका कारण मानते हैं, लेकिन इसका सबसे बड़ा कारण पूंजीवादी अर्थव्यवस्था है। यह व्यवस्था व्यक्ति को इतना धन अर्जित करने के लिए प्रेरित करती है कि भविष्य में बिना श्रम के जीवनयापन संभव हो सके।परिणामस्वरूप सुखवाद और आरामतलबी बढ़ती है और तप का महत्त्व घटता जाता है। बिना परिश्रम अधिक आय प्राप्त करने के प्रलोभन देने वाली अनेक योजनाएं इसी मानसिकता का उदाहरण हैं।

गीता में क्या है राजसी तप?

आज अगर व्यक्ति कठिन परिश्रम भी करता है तो आमतौर पर उसका उद्देश्य धन, पद या सत्ता प्राप्त करना होता है। गीता की भाषा में इसे राजसी तप कहा जा सकता है, पर यह सात्विक तप नहीं है। प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में किया गया कठोर श्रम भी अवसर भविष्य के व्यक्तिगत लाभ का निवेश होता है। उसमें आत्मिक उन्नति, चरित्र-निर्माण या लोक-कल्याण का भाव अनिवार्य रूप से उपस्थित नहीं होता।

तप के अभाव में मनुष्य की गुणवत्ता का भी ह्रास होता है। केवल आर्थिक सफलता के लिए किया गया परिश्रम किसी व्यक्ति को संयमी, ईदियनिग्रही और निस्वार्थ नहीं बना सकता। जब समाज में तप का आदर्श कमजोर पड़ता है, तब मनुष्य स्वयं भी अधिक उपयोगी और संवेदनशील नहीं रह जाता। यह भी विचारणीय है कि कहीं हमारी दुनिया इतनी असंवेदनशील तो नहीं होती जा रही कि किसी के त्याग और कष्ट से न प्रेरणा मिलती है, न करुणा।

अगर समाज को दीर्घकालीन नैतिक और मानवीय शक्ति चाहिए, तो तप को फिर से एक आदर्श मूल्य के रूप में प्रतिष्ठित करना होगा।

तप केवल कष्ट सहने का नाम नहीं, बल्कि स्वयं को श्रेष्ठ बनाने और व्यापक हित के लिए समर्पित करने की वह साधना है, जिसके बिना व्यक्ति और समाज दोनों का वास्तविक उत्थान संभव नहीं।

मोदी ने माहौल ही बदल डाला, रेड कॉरिडोर से रेड कारपेट पर रैंप वाक करने लगीं पूर्व नक्सली महिलाएं

(नीरज कुमार दुबे)
कभी हथियार उठाकर चलने वाली इन महिलाओं ने आत्मसमर्पण के बाद हिंसा का रास्ता छोड़ा और समाज में लौटने का फैसला किया। आज इनमें से कई महिलाएं सामाजिक संगठनों के साथ काम कर रही हैं, नई आजीविका तलाश रही हैं और उन अवसरों को हासिल कर रही हैं, जो कभी उनके लिए दूर की बात थे।

रेड कॉरिडोर पर चलने वाले कदम अब रेड कार्पेट पर अपने जलवे बिखेर रहे हैं। कभी नक्सलियों की साथी रहने के दौरान हाथों में बंदूक थामकर बस्तर के घने जंगलों में भटकने वाली महिलाएं अब उसी आत्मविश्वास के साथ रैंप पर चल रही हैं, जहां उनके स्वागत में गोलियों की आवाज नहीं, तालियों की गड़गड़ाहट सुनाई दे रही है। रायपुर में राष्ट्रीय हथकण्ठा दिवस के अवसर पर आयोजित ट्राइबल फैशन शो में पूर्व महिला माओवादियों ने हाथ से बुने परिधानों में रैंप वांक कर एक ऐसी तस्वीर पेश की, जिसकी कुछ साल पहले कल्पना भी मुश्किल थी। यह सिर्फ फैशन शो नहीं था, बल्कि बंदूक से मुख्यधारा, हिंसा से विकास और भय से आत्मविश्वास तक बस्तर की बदलती कहानी का जीवंत प्रतीक था।

कभी बस्तर के जंगलों में हथियार उठाकर चलने वाली इन महिलाओं ने आत्मसमर्पण के बाद हिंसा का रास्ता छोड़ा और समाज में लौटने का फैसला किया। आज इनमें से कई महिलाएं सामाजिक संगठनों के साथ काम कर रही हैं, नई आजीविका तलाश रही हैं और उन अवसरों को हासिल कर रही हैं, जो कभी उनके लिए दूर की बात थे। रैंप पर उनका आत्मविश्वास इस बात का संकेत है कि पुनर्वास केवल हथियार छीन लेने का नाम नहीं, बल्कि सम्मानजनक जीवन का रास्ता खोलने की प्रक्रिया है।

इस आयोजनका वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ तो लोगों ने भी इसे बस्तर के बदलते चेहरे की असाधारण तस्वीर बताया। कई यूजरर्स ने कहा कि कुछ वर्ष पहले तक ऐसी तस्वीर की कल्पना करना भी कठिन था। किसी ने इसे सशक्तिकरण का वास्तविक रूप बताया तो किसी ने सवाल उठाया कि ऐसी कहानियों को व्यापक प्रचार क्यों नहीं मिलता। दरअसल, रैंप पर चलती ये महिलाएं उस बदलाव की प्रतिनिधि हैं, जो दशकों तक वामपंथी उग्रवाद से प्रभावित इलाकों में धीरे-धीरे जमीन पर आकार ले रहा है। बस्तर में बदलाव की सबसे बड़ी तस्वीर खेल के मैदानों से भी सामने आई है। बस्तर ओलंपिक 2025 में 3.91 लाख से अधिक खिलाड़ियों का पंजीयन हुआ। इससे भी महत्वपूर्ण यह रहा कि 700 से अधिक आत्मसमर्पित नक्सली और हिंसा से प्रभावित ग्रामीण ‘नियो बात’ यानी ‘नया रास्ता’ टीम के तहत खेलों में शामिल हुए। महिलाओं और बेटियों की भागीदारी भी लगभग तीन गुना बढ़ी। यानी जिन इलाकों में कभी बंदूकों की गूंज सुनाई देती थी, वहां अब खेलों की

इस आयोजन का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ तो लोगों ने भी इसे बस्तर के बदलते चेहरे की असाधारण तस्वीर बताया। कई यूजरर्स ने कहा कि कुछ वर्ष पहले तक ऐसी तस्वीर की कल्पना करना भी कठिन था। किसी ने इसे सशक्तिकरण का वास्तविक रूप बताया तो किसी ने सवाल उठाया कि ऐसी कहानियों को व्यापक प्रचार क्यों नहीं मिलता। दरअसल, रैंप पर चलती ये महिलाएं उस बदलाव की प्रतिनिधि हैं, जो दशकों तक वामपंथी उग्रवाद से प्रभावित इलाकों में धीरे-धीरे जमीन पर आकार ले रहा है।

बस्तर में बदलाव की सबसे बड़ी तस्वीर खेल के मैदानों से भी सामने आई है। बस्तर ओलंपिक 2025 में 3.91 लाख से अधिक खिलाड़ियों का पंजीयन हुआ। इससे भी महत्वपूर्ण यह रहा कि 700 से अधिक आत्मसमर्पित नक्सली और हिंसा से प्रभावित ग्रामीण ‘नियो बात’ यानी ‘नया रास्ता’ टीम के तहत खेलों में शामिल हुए। महिलाओं और बेटियों की भागीदारी भी लगभग तीन गुना बढ़ी। यानी जिन इलाकों में कभी बंदूकों की गूंज सुनाई देती थी, वहां अब खेलों की

तालियां सुनाई दे रही हैं। शिक्षा के मोर्चे पर भी बदलाव साफ दिखाई देता है। माओवादियों द्वारा ध्वस्त या बंद कराए गए कई स्कूल फिर खुले हैं और जंगलों के बीच बच्चों की पढ़ाई दोबारा शुरू हुई है। आदिवासी युवाओं को बेहतर अवसर देने के लिए 259 एकलव्य मॉडल आवासीय स्कूल, 46 आईटीआई और 49 कौशल विकास केंद्र स्थापित किए जा चुके हैं।

राज्य सरकार अब विकास को बस्तर के आखिरी छोर तक पहुंचाने पर जोर दे रही है। ‘नियद नेछानार’ योजना के तहत सुरक्षा बलों के कैंपों को ‘सेवा डेरा’ के रूप में इस्तेमाल कर ग्रामीणों तक राशन, बिजली, पानी और स्वास्थ्य सेवाएं पहुंचाई जा रही हैं। ‘हर गांव रोशन’ जैसी पहलों के जरिए इंदरावती टाइगर रिजर्व जैसे दुर्गम इलाकों के 70 से अधिक गांवों तक पहली बार बिजली और सोलर लाइटिंग पहुंची है। डिस्ट्रिक्ट मिनरल फंड की राशि से आदिवासी गांवों में पक्के मकान और बुनियादी ढांचा विकसित किया जा रहा है।

साथ ही कनेक्टिविटी भी इस बदलाव की रीढ़ बन रही है। बस्तर के दुर्गम इलाकों में 11 हजार किलोमीटर से अधिक सड़कों और 1,300 से ज्यादा मोबाइल टावरों का विस्तार हुआ है। इससे ग्रामीण बाजारों, प्रशासन और देश-दुनिया से जुड़ रहे हैं। उधर, माओवाद के कमजोर पड़ने के बाद सुरक्षा बल अब जंगलों में छिपे आईईडी को भी नष्ट कर रहे हैं और ‘आईईडी मुक्त पंचायत’ की दिशा में काम हो रहा है।

इस बदलते माहौल की पुष्टि राजनीतिक स्तर पर भी हो रही है। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने केंद्रीय ग्रामीण विकास एवं कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान से मुलाकात कर बस्तर में सड़क संपर्क बढ़ाने के लिए केंद्रीय योजनाओं के मानकों में विशेष छूट की मांग की है। उनका कहना है कि चार-पांच दशकों के बाद बस्तर माओवाद के प्रभाव से बाहर निकलने की स्थिति में पहुंचा है, लेकिन दूर-दराज बिखरी आबादी के कारण सामान्य जनसंख्या आधारित नियमों के तहत सड़क निर्माण में दिक्कत आती है। अब चुनौती है कि शांति को स्थायी विकास में बदला जाए।

सबसे प्रतीकात्मक बदलाव तिरंगे को लेकर है। बस्तर संभाग के 92 से अधिक ऐसे सुदूर गांवों में स्वतंत्रता के बाद पहली बार राष्ट्रीय ध्वज शान से फहराया गया है। साथ ही पुनर्वास नीति 2025 के तहत आत्मसमर्पण करने वाले माओवादियों को घर, जमीन, मासिक सहायता और रोजगार के अवसर देकर मुख्यधारा में सम्मानजनक जीवन की राह दी जा रही है।

बहरहाल, बस्तर की कहानी इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यहां बदलाव केवल सुरक्षा बलों की सफलता की कहानी नहीं है। यह उस सामाजिक परिवर्तन की कहानी है, जिसमें बंदूक की जगह खेल, जंगल के डर की जगह स्कूल, अलगाव की जगह सड़क और हिंसा की जगह रोजगार ने लेना शुरू किया है। साथ ही जिस छत्तीसगढ़ के विभिन्न क्षेत्रों को कभी ‘रेड कारिडोर’ के नाम से जाना जाता था, वहां अब रेड कार्पेट पर आत्मविश्वास से चलती पूर्व महिला माओवादियों की तस्वीरें यही संदेश दे रही है कि राज्य का भविष्य अब भय नहीं, बल्कि शांति, सम्मान और संभावनाओं के रास्ते पर आगे बढ़ रहा है।

www.mookpatrika.com

बेमेतरा, बुधवार 19 अगस्त 2026

6

संक्षिप्त

समाचार

सैमसंग ने लॉन्च किया गैलेक्सी फॉरएवर , युवा ग्राहकों के लिए गैलेक्सी जेड फेल्ड8 सीरीज को अपनाने और इस्तेमाल करने का एक आसान तरीका

गुरुग्राम: सैमसंग इंडिया ने गैलेक्सी जेड फोल्ड8 अल्ट्रा और गैलेक्सी जेड फोल्ड8 स्मार्टफोन खरीदने वाले ग्राहकों के लिए गैलेक्सी फॉरएवर नाम का एक आसान ओनरशिप प्रोग्राम शुरू किया है। इस प्रोग्राम में 24 महीने की जीरो कॉस्ट ईएमआई, सैमसंग केयर प्लस डिवाइस प्रोटेक्शन और डिवाइस की इनवॉइस वैल्यू के 55 प्रतिशत तक के गारंटीड बायबैक की सुविधा एक साथ मिलती है। गैलेक्सी फॉरएवर उन युवा ग्राहकों के लिए बनाया गया है जो आज ही एक प्रीमियम फोल्डेबल फोन चाहते हैं, लेकिन साथ ही जब भी अपग्रेड करने का समय आए, तब डिवाइस की वैल्यू को लेकर भी ज्यादा भरोसा चाहते हैं। बाजार में मिलने वाली रीसेल कीमत पर पूरी तरह निभर रहने की बजाय, ग्राहकों को प्रोग्राम की शर्तों के मुताबिक अपने डिवाइस को अपग्रेड या वापस करने का एक तय विकल्पे मिलता है।

गैलेक्सी फॉरएवर में तीन मुख्य फायदे शामिल हैं-
24 महीने की जीरो कॉस्ट ईएमआई, जिससे प्रीमियम फेल्डेबल तकनीक और भी आसानी से मिल सके। सैमसंग केयर प्लस डिवाइस प्रोटेक्शन, जो एक्सीडेंटल और लिक्विड डैमेज को कवर करता है और इसमें क्लेम प्रोसेसिंग फ़ैस बिल्कुल नहीं लगती, जिससे ग्राहकों को और ज्यादा भरोसा मिलता है (ग्राहकों को सैमसंग केयर प्लस अलग से खरीदने की जरूरत नहीं है, क्योंकि यह प्रोग्राम में पहले से ही शामिल है)
55 प्रतिशत तक का गारंटीड बायबैक, जिससे ग्राहक प्रोग्राम की शर्तों के मुताबिक 10वें महीने से अपने डिवाइस को अपग्रेड या वापस कर सकते हैं। गैलेक्सी जेड फोल्ड8 अल्ट्रा, गैलेक्सी फॉरएवर के साथ 9417 रुपये प्रति महीने में उपलब्ध है, जबकि गैलेक्सी जेड फोल्ड8 की शुरुआती कीमत 8584 रुपये प्रति महीने है। दोनों प्लान 24 महीने की जीरो कॉस्ट ईएमआई पर आधारित हैं और इसमें गैलेक्सी फॉरएवर की प्रोग्राम फीस भी शामिल है।

अपोलो हॉस्पिटल्स ने हैल्थकेयर की दुनिया में पहली बार ‘ऑलवेज ओपन, ऑलवेज हेयर’ लॉन्च किया

बिलासपुर। आज अपोलो हॉस्पिटल्स ने ‘ऑलवेज ओपन, ऑलवेज हेयर’ की शुरुआत की। यह अपनी तरह का पहला अभियान है, जो रविवार सहित हफ्ते के सातों दिन रूटीन और योजनाबद्ध हैल्थकेयर सेवाएं उपलब्ध कराएगा। हालांकि अपोलो की इमरजेंसी, क्रिटिकल केयर और इनपेशेंट सेवाएं हमेशा से 24/7 उपलब्ध रही हैं। लेकिन इस नई पहल के बाद आउटपेशेंट कंसल्टेशन, डायग्नोस्टिक, प्रिवेंटिव हैल्थ चेक, फ़ैलोअप कंसल्टेशन और पहले से निर्धारित प्रक्रियाएं भी रविवार सहित सातों दिन शुरू हो जाएंगी, जिससे मरीजों और परिवारों को बिना इंतजार किए तुरंत केयर प्राप्त हो सकेगी। डॉ. प्रताप सी. रेड्डी, फ़ंडर एवं चेयरमैन, अपोलो हॉस्पिटल्स ग्रुप ने कहा, “चार दशकों से अधिक समय से अपोलो का विश्वास रहा है कि हैल्थकेयर का मतलब बीमारियों का इलाज करना नहीं, बल्कि बीमारियों की रोकथाम करना और स्वास्थ्य की रक्षा करना है। ‘ऑलवेज ओपन। ऑलवेज हेयर’ पहल हमारे इसी वादे को आगे बढ़ा रही है। हम इमरजेंसी और क्रिटिकल केयर के लिए हमेशा मौजूद रहते हैं। अब हम रूटीन और प्रिवेंटिव केयर भी हफ्ते के सातों दिन उपलब्ध करा रहे हैं। यह हर भारतीय की सेवा के लिए हमारी प्रतिबद्धता है।” उन्होंने कहा, “यह अभियान अपोलो में हर डॉक्टर, हर नर्स, हर तकनीशियन और हर हैल्थकेयर वर्कर और उनके परिवारों को समर्पित है। हैल्थकेयर का मतलब खुद से ऊपर उठकर सेवा करना है। उनकी प्रतिबद्धता ने हमें भारत में मरीजों और परिवारों के लिए यह कदम बढ़ाने के लिए प्रेरित किया। समय पर परामर्श द्वारा जब-जब बीमारी की तुरंत पहचान और रोकथाम होगी, तब-तब हम एक जीवन में परिवर्तन लेकर आएंगे। अगर हम लाखों लोगों को स्थिति गंभीर होने से पहले ही रोकथाम के लिए प्रेरित करेंगे, तो हमें भविष्य को बदलने में मदद मिलेगी।”

पेट्रोलमहंगाहोतोहोनेदो,ईरानकोहसानाजरूरी: जनता को ट्रंप का फरमान; होर्मुज को लेकर किया बड़ा दावा

वाशिंगटन, एजेंसी। क्या ईरान से बढ़ते तनाव की कीमत अब अमेरिकी जनता को पेट्रोल महंगा खरीदकर चुकानी होगी अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने शुक्रवार को अमेरिकियों से पेट्रोल के लिए थोड़ा ज्यादा भुगतान करने को तैयार रहने को कहा। न्यूयॉर्क के गार्डन सिटी में एक राजनीतिक रैली में ट्रंप ने कहा कि एक बहुत बुरे देश को परमाणु हथियार हासिल करने से रोकने के लिए गैसोलीन की कीमत में थोड़ी बढ़ोतरी सहना उचित होगा। अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप ने यह भी दावा किया कि ईरान को हराने के बाद होर्मुज को अमेरिका का क्षेत्र घोषित करेंगे। इससे पहले ही इस महत्वपूर्ण जलमार्ग को लेकर अमेरिका और ईरान के बीच तनाव बढ़ चुका है। युद्धविराम की दिशा में बातचीत भी आगे नहीं बढ़ रही है। होर्मुज कच्चे तेल और प्राकृतिक गैस की आवाजाही के लिए बेहद महत्वपूर्ण जलमार्ग है। लेकिन पिछले कुछ दिनों से यहां तेल टैंकरों की आवाजाही रुकी हुई है। ईरान ने शनिवार को अमेरिका से हार की हकीकत स्वीकार करने को कहा। ईरान के उप विदेश मंत्री काजेम गरीबाबादी ने एक्स पर लिखा कि जब तक अमेरिका अपनी हार स्वीकार नहीं करता और कल्पनाओं में रहना बंद नहीं करता, तब तक ईरान नाकेबंदी लागू करता रहेगा। ईरान ने यह भी कहा कि होर्मुज को केवल उसके आदेश पर खोला और बंद किया जाएगा। क्या अमेरिका-ईरान के बीच बातचीत फिर शुरू होगी ईरानी विदेश मंत्री अब्बास अराघवी ने कहा है कि ईरान ने अमेरिका के साथ बातचीत फिर शुरू करने का फैसला नहीं किया है। उन्होंने कहा कि होर्मुज में जहाजों की आवाजाही फिर शुरू करने के लिए अमेरिका को कुछ शर्तें पूरी करनी होंगी। इस बीच ट्रंप और अमेरिकी ट्रेजरी सचिव स्कॉट बसेंट ने ईरान पर और आर्थिक दबाव बढ़ाने की बात कही है। बसेंट ने न्यूजमेसज से कहा कि तेहरान के खिलाफ अतिरिक्त कदमों की घोषणा अगले सप्ताह की जाएगी। क्या अमेरिका में पेट्रोल और महंगा होने वाला है।

देश-विदेश

पांच घायल; पुलिस से बचने के लिए अलमारी में छिपा 19 वर्षीय आरोपी

वर्जीनिया यूनिवर्सिटी में गोलीबारी से हड़कंप

वाशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका की वर्जीनिया स्टेट यूनिवर्सिटी में शनिवार तड़के हुई गोलीबारी के मामले में पुलिस ने 19 वर्षीय कैमरन हैरिस को कैपस की एक डॉरमिटरी की अलमारी से गिरफ्तार किया है। घटना में पांच लोग घायल हुए, जिनमें एक की हालत गंभीर थी। पुलिस ने आरोपी के खिलाफ आठ गंभीर अपराधों के वारंट हासिल किए हैं। घटना के बाद लगाए गए कैपस लॉकडाउन को हटा दिया गया है और जांच में कई कानून प्रवर्तन एजेंसियां सहयोग कर रही हैं। गोलीबारी के पीछे की वजह अभी सामने नहीं आई है। चेस्टरफील्ड काउंटी पुलिस ने एक बयान में बताया कि हेनरिको, वर्जीनिया निवासी कैमरन हैरिस कैपस का छात्र नहीं है। गोलीबारी में घायल हुए चार लोग भी यूनिवर्सिटी के छात्र नहीं थे। घायलों की उम्र 17 से 23 वर्ष के बीच है। अधिकारियों के मुताबिक, घायलों में शामिल 20 वर्षीय एक छात्र को अस्पताल से छुट्टी दे दी गई है। पुलिस ने अभी तक किसी भी पीड़ित का नाम सार्वजनिक नहीं किया है।

अधिकारियों ने घटना के संभावित मकसद को लेकर फिलहाल कोई जानकारी नहीं दी है। पुलिस ने हेनरिको के खिलाफ आठ गंभीर अपराधों यानी फेलनी के वारंट हासिल किए हैं। इनमें जान-बूझकर किसी व्यक्ति को घायल करना और गंभीर अपराध के दौरान बंदूक का इस्तेमाल करना जैसी धाराएं शामिल हैं। यह भी तत्काल

तीन पायलट, दो एसयू-24 और हिरासत का दावा: ईरान के दावे को दोहा ने किया खारिज अब आमने-सामने दोहा और तेहरान



तेहरान, एजेंसी। कतर ने तीन ईरानी पायलटों को छह महीने से हिरासत में रखने के ईरानी मीडिया के दावे को पूरी तरह खारिज कर दिया है। कतर का कहना है कि उसने कथित हवाई क्षेत्र उल्लंघन के दौरान नियमों के तहत कार्रवाई की और बाद में खोज एवं बचाव अभियान भी चलाया। वहीं, ईरान ने तीन पायलटों के कतरी हिरासत में होने का दावा करते हुए उनसे मुलाकात की अनुमति देने की मांग की है। कतर के विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता माजेद मोहम्मद अल-अंसारी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर एक पोस्ट में कहा कि कतरी हवाई क्षेत्र के कथित उल्लंघन के मामले में ईरानी पायलटों से संपर्क किया गया था। उन्होंने कहा कि अधिकारियों ने उनके विमान

ट्रंपनेसाड़ा कीकिमसंगतस्वीर:चेहरे परनहींदिखीमुस्कान;फिरक्यों बोले- हमबहुतअच्छेसेमिलतेहैं

वाशिंगटन डीसी, एजेंसी। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने शनिवार को उत्तर कोरिया के नेता किम जोंग उन के साथ अपनी एक पुरानी तस्वीर साझा की। इन तस्वीरों में दोनों के चेहरे गंभीर नजर आ रहे हैं। इस तस्वीर को लेकर ट्रंप ने मजाक किया। उन्होंने कहा कि किम जोंग उन और उनके बीच अच्छे संबंध हैं। ट्रंप ने ट्वरुथ सोशल पर लिखा, इस खास तस्वीर में भले ही हमारे चेहरे दोस्ताना नहीं दिख रहे हैं। लेकिन ऐसी कई तस्वीरें हैं, जिनमें हम मुस्कुरा रहे हैं। किम जोंग उन और मैं बहुत अच्छे से मिलते हैं। इसके अलावा, ट्रंप ने एआई से बनाई हुई तस्वीरें भी पोस्ट की हैं। इन तस्वीरों में वह अमेरिका के पहले राष्ट्रपति जॉर्ज वाशिंगटन के साथ नजर आ रहे हैं। एक तस्वीर में दोनों के हाथों में कलम दिख रही है। वहीं, दूसरी तस्वीर में दोनों घोड़े पर नजर आ रहे हैं। ट्रंप का यह बयान ऐसे समय आया, जब उत्तर कोरिया अमेरिका और दक्षिण कोरिया के बीच होने वाले आगामी सैन्य अभ्यासों की आलोचना कर रहा है। उत्तर कोरिया का कहना है कि इन सैन्य अभ्यासों से कोरियाई प्रायद्वीप में तनाव और बढ़ेगा। अमेरिका और दक्षिण कोरिया का संयुक्त सैन्य अभ्यास उलवी फ्रीडम शील्ड 17 अगस्त से शुरू होने वाला है। यह अभ्यास 27 अगस्त तक चलेगा। इन सैन्य अभ्यासों में ड्रोन से निपटने, जीपीएस में रुकावट पैदा होने की स्थिति से निपटने और साइबर हमलों का सामना करने का प्रशिक्षण शामिल होगा। अमेरिका और उसके सहयोगी देश इन अभ्यासों के जरिये उत्तर कोरिया की बदलती सैन्य क्षमताओं के अनुसार अपनी तैयारी बेहतर करना चाहते हैं। उत्तर कोरिया लगातार अमेरिका और दक्षिण कोरिया के सैन्य अभ्यासों की आलोचना करता रहा है। वह इन अभ्यासों को उकसावे वाली कार्रवाई बताता है। उत्तर कोरिया के विदेश मंत्रालय के एक प्रवक्ता ने शुक्रवार को कहा, अमेरिका, जापान और दक्षिण कोरिया के बीच सैन्य सहयोग धीरे-धीरे एक परमाणु गठबंधन में बदल रहा है। प्रवक्ता ने कहा, अमेरिका-जापान-दक्षिण कोरिया का सैन्य सहयोग एक परमाणु गठबंधन में बदल रहा है और उत्तर कोरिया खतरे के नए स्तर का जवाब रोकने की क्षमता के नए स्तर से देगा।



एंथ्रोपिक सीईओ की पत्नी का एपस्टीन कनेक्शन: कंपनी में निवेश के लिए मांगी मदद; ईमेल से सामने आई पूरी कहानी

वाशिंगटन, एजेंसी। एंथ्रोपिक के सीईओ डारियो अमोदेई की पत्नी और उनकी करीबी सलाहकार केमी क्लार्क ने कथित तौर पर जेफरी एपस्टीन से अपनी कंपनी में निवेश कराने की कोशिश की थी। क्लार्क ने अपनी कंपनी को महिलाओं के लिए बनाई गई एक रिक्वेल्यूशनरी एडल्ट एंटरटेनमेंट कंपनी बताया था। वॉल स्ट्रीट जर्नल की एक रिपोर्ट और एपस्टीन फाइल्स में मिले ईमेल से यह जानकारी सामने आई है।

केमी क्लार्क की एपस्टीन से मुलाकात मार्च 2011 में हुई थी। यह मुलाकात लेखकों और किताबों के काम में मदद करने वाले जॉन बॉकमैन ने कराई थी। उस समय तक एपस्टीन का नाम यौन अपराध के मामले में सामने आ चुका था। साल 2008 में उसे यौन अपराधी और वेश्यावृत्ति के लिए लोगों को उकसाने के मामले में दोषी ठहराया गया था।

रॉब्रिभोज पर मिलने का सुझाव दिया था। एपस्टीन फाइल्स में मिले ईमेल के मुताबिक, ब्रॉकमैन ने एपस्टीन से कहा था कि उन्हें क्लार्क और उनकी बिजनेस साझेदार मिशेल कैपोसेफालो के साथ रात्रिभोज पर मिलना चाहिए।

जिस ईमेल में क्लार्क का एपस्टीन से परिचय कराया गया था, उसके जवाब में क्लार्क ने लिखा- हम आज शाम आपके साथ रात्रिभोज करना पसंद करेंगे। अगले दिन क्लार्क ने अपनी कंपनी के लिए कितने पैसे की जरूरत है, इसकी जानकारी एपस्टीन को ईमेल में भेजी। उन्होंने यह भी लिखा- कल रात आपसे मिलकर बहुत अच्छा लगा! इसके कुछ दिन बाद क्लार्क ने अपनी कंपनी की पहली चार फिल्मों की रिक्रि्ट और कहानी का खाका एपस्टीन को भेजा। उन्होंने कहा

डॉरमिटरी के बाहर गोली लगने से घायल पांच लोग मिले।

यूनिवर्सिटी की वेबसाइट के मुताबिक, छात्रों के लिए रोजडेस हॉल एक सप्ताह पहले ही खोल दिए गए थे, जबकि कक्षाएं सोमवार से शुरू होनी हैं। कई छात्र नए विद्यार्थियों के स्वागत और उनके कैपस जीवन की शुरुआत से जुड़े यूनिवर्सिटी के न्यू ट्रोजन एक्सपीरियंस कार्यक्रम में भी हाल ही में शामिल हुए थे। यूनिवर्सिटी ने अपने बयान में कहा,हम समझते हैं कि इस घटना ने हमारे छात्रों, अभिभावकों, पूर्व छात्रों, दोस्तों और व्यापक डूंस समुदाय के बीच चिंता पैदा की है। हमारे छात्रों की सुरक्षा और भलाई हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है।

शनिवार सुबह कैपस में बड़ी संख्या में पुलिसकर्म तैनात रहे। यूनिवर्सिटी ने छात्रों को सलाह दी कि वे अतिरिक्त सुरक्षा उपायों और उपलब्ध सहायता सेवाओं से जुड़ी जानकारी के लिए अपने ईमेल नियमित रूप से चेक करते रहें। काउंटी पुलिस के अनुसार, ब्यूरो ऑफ अल्कोहल, टोबैको, फायरआर्म्स एंड एक्सप्लोसिव्स और हनोवर काउंटी शेरिफ ऑफिस भी जांच में सहायता कर रहे हैं। वर्जीनिया स्टेट यूनिवर्सिटी वर्जीनिया के एट्रिक में स्थित एक ऐतिहासिक रूप से अश्वेत यूनिवर्सिटी है। यह राज्य की राजधानी रिचमंड से करीब 39 किलोमीटर दक्षिण में स्थित है। इस सार्वजनिक विश्वविद्यालय में लगभग 5,700 छात्र पढ़ते हैं।

हममुसलमानहैं,हमसह्नकरतेहैं,पाकके हिंदुओंकोलेकरआसिफ जरदारीनेक्या कहाअखंडभारतकाभीजिक्रकिया

इस्लामाबाद, एजेंसी। पाकिस्तान अल्पसंख्यकों पर अत्याचार के लिए दुनियाभर में बदनाम है। अल्पसंख्यक हिंदू समुदाय के लोगों के गंभीर उत्पीड़न, जबरन धर्म परिवर्तन के मामले आए दिन सामने आते हैं और उनकी आबादी में भी भारी गिरावट आई है। हालांकि, पाकिस्तान के राष्ट्रपति आसिफ अली जरदारी ने इसके विपरीत दावा किया है। जरदारी ने कहा कि पाकिस्तान में रहने वाले हिंदू भी उतने ही आजाद हैं, जितने किसी और जगह पर हैं। उन्होंने यह भी दावा किया कि पाकिस्तान के हिंदू भारत में रहने के बजाय पाकिस्तान में रहना पसंद करेंगे। उन्होंने यह भी कहा कि पाकिस्तान में ऐसे मुसलमान हैं, जिनकी सोच है कि वे हिंदुओं को बर्दाश्त करते हैं। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, जरदारी ने 14 अगस्त को इस्लामाबाद में यादगार-ए-फतह विजय स्मारक समारोह में एक सभा को संबोधित करते हुए ये बातें कहीं। यह समारोह पाकिस्तान के स्वतंत्रता दिवस के मौके पर आयोजित किया गया था। पाकिस्तान के राष्ट्रपति ने ये बातें भारत और पाकिस्तान की सोच में अंतर बताते हुए कही। जरदारी ने भारत के अखंड भारत में विश्वास का जिक्र किया। उन्होंने कहा कि इसके बीच बहुत कुछ ऐसा है, जिसे भारतीय भूल गए हैं। इसके बाद उन्होंने पाकिस्तान की पहचान एक इस्लामी देश के रूप में बताई। पाकिस्तान में रहने वाले हिंदुओं के प्रति अपने देश के रवये पर बात करते हुए जरदारी ने कहा, हम मुसलमान हैं और हमारी सोच है कि हम बर्दाश्त करते हैं। उन्होंने आगे दावा किया, पाकिस्तान में तीन से चार प्रतिशत हिंदू आबादी है और वे उतने ही आजाद हैं, उतने ही अच्छे हाल में हैं, जितने वे कहीं और थे।



इस्लामाबाद, एजेंसी। पाकिस्तान अल्पसंख्यकों पर अत्याचार के लिए दुनियाभर में बदनाम है। अल्पसंख्यक हिंदू समुदाय के लोगों के गंभीर उत्पीड़न, जबरन धर्म परिवर्तन के मामले आए दिन सामने आते हैं और उनकी आबादी में भी भारी गिरावट आई है। हालांकि, पाकिस्तान के राष्ट्रपति आसिफ अली जरदारी ने इसके विपरीत दावा किया है। जरदारी ने कहा कि पाकिस्तान में रहने वाले हिंदू भी उतने ही आजाद हैं, जितने किसी और जगह पर हैं। उन्होंने यह भी दावा किया कि पाकिस्तान के हिंदू भारत में रहने के बजाय पाकिस्तान में रहना पसंद करेंगे। उन्होंने यह भी कहा कि पाकिस्तान में ऐसे मुसलमान हैं, जिनकी सोच है कि वे हिंदुओं को बर्दाश्त करते हैं। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, जरदारी ने 14 अगस्त को इस्लामाबाद में यादगार-ए-फतह विजय स्मारक समारोह में एक सभा को संबोधित करते हुए ये बातें कहीं। यह समारोह पाकिस्तान के स्वतंत्रता दिवस के मौके पर आयोजित किया गया था। पाकिस्तान के राष्ट्रपति ने ये बातें भारत और पाकिस्तान की सोच में अंतर बताते हुए कही। जरदारी ने भारत के अखंड भारत में विश्वास का जिक्र किया। उन्होंने कहा कि इसके बीच बहुत कुछ ऐसा है, जिसे भारतीय भूल गए हैं। इसके बाद उन्होंने पाकिस्तान की पहचान एक इस्लामी देश के रूप में बताई। पाकिस्तान में रहने वाले हिंदुओं के प्रति अपने देश के रवये पर बात करते हुए जरदारी ने कहा, हम मुसलमान हैं और हमारी सोच है कि हम बर्दाश्त करते हैं। उन्होंने आगे दावा किया, पाकिस्तान में तीन से चार प्रतिशत हिंदू आबादी है और वे उतने ही आजाद हैं, उतने ही अच्छे हाल में हैं, जितने वे कहीं और थे।

एंथ्रोपिक सीईओ की पत्नी का एपस्टीन कनेक्शन: कंपनी में निवेश के लिए मांगी मदद; ईमेल से सामने आई पूरी कहानी



कि एपस्टीन को यह कंटेंट महिलाओं के साथ पसंद आ सकता है। क्लार्क ने ईमेल में लिखा, जेफरी! हमें लगा कि आपको और महिलाओं को हमारी पहली चार फिल्मों, अमेरिकन गर्ल इन पेरिस की रिक्रि्ट/कहानी पसंद आ सकती है। थोड़ा आपत्तिजनक कंटेंट है। इसके करीब एक साल बाद मार्च 2012 में क्लार्क ने एपस्टीन से पूछा कि क्या वह उनकी और उनकी एक साथी की कंपनियों में पैसा लगाने में दिलचस्पी रखते हैं। हालांकि, ऐसा कोई सबूत नहीं है कि एपस्टीन ने उन्हें पैसा दिया था। एक दूसरे ईमेल में एपस्टीन ने जवाब दिया था- मैं टीवी के ऐसे कंटेंट में पैसा नहीं लगा सकता। जुलाई 2012 में क्लार्क ने एपस्टीन को अपने नए घर की पार्टी में भी बुलाया था। हालांकि, ईमेल से यह पता नहीं चलता कि इसके बाद दोनों दोबारा आमने-सामने मिले थे।

क्लार्क को डारियो अमोदेई और उनकी कंपनी के लिए सलाहकार और रणनीतिकार बताया गया है। रिपोर्ट में यह सवाल भी उठाया गया है कि अमोदेई और उनकी कंपनी पर क्लार्क का कितना अंतर है। क्लार्क आधिकारिक तौर पर एंथ्रोपिक में काम नहीं करती हैं। इसके बावजूद वह अमोदेई की पद के पीछे से मदद करने वाली एक प्रभावशाली सलाहकार के तौर पर काम करती हैं। जब उनके पति बड़े कार्यक्रमों में बोलते हैं, तो वह अक्सर आगे की सीट पर बैठी दिखाई देती हैं। ऐसा दावोस जैसे बड़े कार्यक्रमों में भी देखा गया। वह अमेरिका के सन वैली में होने वाली एलन एंड कंपनी कॉन्फ्रेंस जैसे बड़े कार्यक्रमों में निवेशकों से भी बात करती हैं। इस साल नई दिल्ली में हुए एआई इंपैक्ट समिट में भी वह अपने पति के साथ भारत आई थीं।

शनिवार रात गल्फ

ऑफ टॉमिनी में 6.0 तीव्रता का भूकंप आया। यह भूकंप भारतीय समयानुसार रात 9 बजकर 55 मिनट पर आया। इसकी गहराई जमीन के अंदर 68 किलोमीटर थी। भूकंप का केंद्र गल्फ ऑफ टॉमिनी में दर्ज किया गया। यह झटका उस समय आया जब इंडोनेशिया पहले से ही दिन में आए दो बड़े भूकंपों के असर से जूझ रहा था।

सुबह आया 7.7 तीव्रता का भूकंप इंडोनेशिया के प्लोरेस क्षेत्र में आया था। उसका केंद्र पूर्वी नुसा तेंगारा प्रांत के एंडे शहर से करीब 68 किलोमीटर उत्तर-उत्तर-पश्चिम में था। वहीं रात का 6.0 तीव्रता वाला भूकंप गल्फ ऑफ टॉमिनी में 0.174 डिग्री उत्तरी अक्षांश और 120.312 डिग्री पूर्वी देशांतर पर दर्ज किया गया। उपलब्ध जानकारी में दोनों भूकंपों के केंद्रों के बीच सीधी दूरी नहीं बताई गई है। इसलिए दिए गए आंकड़ों के आधार पर उनकी सटीक दूरी तय करना संभव नहीं है।

म्यांमार में फिर हिली धरती, 3.5 तीव्रता के भूकंप से महसूस हुए हल्के झटके; फिलहाल नुकसान की खबर नहीं

यांगून, एजेंसी। भारत के पड़ोसी देश म्यांमार में रविवार सुबह भूकंप के झटके महसूस किए गए हैं। न्यूज एजेंसी एएनआई की जानकारी के मुताबिक, भूकंप की तीव्रता रिक्टर स्केल पर 3.5 मापी गई। भूकंप की तीव्रता कम होने के कारण इसे हल्के स्तर का झटका माना जा रहा है। फिलहाल भूकंप से किसी बड़े नुकसान या जनहानि की खबर सामने नहीं आई है।

भूकंप के झटके महसूस होने के बाद स्थानीय स्तर पर लोगों के बीच कुछ समय के लिए हलचल देखने को मिली। हालांकि, उपलब्ध जानकारी के अनुसार भूकंप इतना शक्तिशाली नहीं था कि बड़े पैमाने पर इमारतों या बुनियादी ढांचे को नुकसान पहुंचाए। स्थानीय प्रशासन और संबंधित एजेंसियां स्थिति पर नजर बनाए हुए हैं। म्यांमार भूकंपीय गतिविधियों के लिहाज से संवेदनशील क्षेत्र माना जाता है। देश में समय-समय पर भूकंप के हल्के और मध्यम झटके महसूस किए जाते रहे हैं। हाल के दिनों में भी म्यांमार में हल्के भूकंप दर्ज किए गए हैं। ऐसे में 3.5 तीव्रता के ताजा

झटके ने एक बार फिर क्षेत्र की भूकंपीय सक्रियता को सामने ला दिया है। इंडोनेशिया में शनिवार को कुछ ही घंटों के भीतर लगातार तीन भूकंप आए। रात में गल्फ ऑफ



टॉमिनी में 6.0 तीव्रता का भूकंप आया। इससे पहले इसी दिन 6.5 तीव्रता का भूकंप और सुबह 7.7 तीव्रता का बेहद शक्तिशाली भूकंप आया था। सुबह के भूकंप में कम से कम 38 लोगों की मौत हुई, कई लोग घायल हुए और बड़ी संख्या

